इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय 2

विषय-वस्तु और संरचना

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
आवर्ती बातें 1
यीशु में अंतिम दिन 2
पुराने नियम से समर्थन 4
तथ्यात्मक पृष्ठभूमियाँ 4
धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण 4
नैतिक दायित्व 5
युगांत-संबंधी भविष्यवाणियाँ 6
राजवंशीय आदर्श 6
दृढ़ बने रहने के लिए उपदेश 7
प्रत्युत्तर 8
प्रेरणाएँ 8
आलंकारिक संरचना 11
स्वर्गदूतों के प्रकाशन (1:1-2:18) 12
मूसा का अधिकार (3:1-4:13) 13
मलिकिसिदक का महायाजक पद (4:14-7:28) 14
नई वाचा (8:1-11:40) 16
व्यावहारिक दृढ़ता (12:1–13:25) 19
उपसंहार 21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय दो

विषय-वस्तु और संरचना

परिचय

हम अक्सर स्वयं को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जहाँ पर हम लोगों को अपने साथ सहमति रखने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसा करने के लिए बहुत से तरीके हैं, परंतु एक सबसे प्रभावशाली तरीका उन मान्यताओं पर अधिक से अधिक निर्माण करना है जिन्हें हम पहले से साझे तौर पर रखते हैं। फिर साझे आधार पर निर्भर होकर हम उन्हें अन्य विषयों के प्रति आश्वस्त करने का प्रयास कर सकते हैं। कई रूपों में, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने भी यही किया है। उसने एक ऐसी कलीसिया को पत्र लिखा जो अपने स्थानीय यहूदी समुदाय में पाई जानेवाली शिक्षा की ओर लौटने के द्वारा सताव से बचने का प्रयास कर रही थी। इसलिए मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उन्हें प्रेरित करने हेतु उसने जितना अधिक हो सके उन मान्यताओं को बढ़ावा दिया जिन्हें वह और उसके पाठक समान रूप में मानते थे।

यह *इब्रानियों की पुस्तक* पर आधारित हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है और हमने इसका शीर्षक "विषय-वस्तु और संरचना" दिया है। इस अध्याय में हम यह देखेंगे कि इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को मसीह के प्रति अपने समर्पण को नया बनाने के लिए उत्साहित करते हुए कैसे अपनी प्रबोधक विधि का अनुसरण किया।

इब्रानियों की पुस्तक की विषय-वस्तु और संरचना पर आधारित हमारा यह अध्याय दो भागों में विभाजित होगा। पहला, हम उन आवर्ती बातों को देखेंगे जो पुस्तक के प्रत्येक मुख्य खंड में पाई जाती हैं। दूसरा, हम इब्रानियों की पुस्तक की आलंकारिक संरचना की खोज करेंगे कि कैसे लेखक ने इन आवर्ती तत्वों को प्रबोधक प्रस्तुतियों में बुना। आइए सबसे पहले इब्रानियों की पुस्तक की आवर्ती बातों को देखते हुए आरंभ करें।

आवर्ती बातें

अपने पिछले अध्याय में हमने इब्रानियों की पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को इस प्रकार सारगर्भित किया था :

> **इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को ठुकराने और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करने हेतु यह पुस्तक लिखी।**

हमारे अध्याय में यहाँ हम यह देखना चाहते हैं कि लेखक ने समान तत्वों का बार-बार प्रयोग करने के द्वारा कैसे अपने उद्देश्य को पूरा किया।

इब्रानियों की आवर्ती बातों को निकटता से देखने पर दिखाई देता है कि लेखक ने तीन मुख्य तत्वों को दोहराने के द्वारा अपने व्यापक उद्देश्य को पूरा किया। पहला, उसने इस तथ्य की ओर ध्यान खींचा कि यीशु में इतिहास अपने अंतिम दिनों में आ पहुँचा है। दूसरा, उसने इस मान्यता के लिए पुराने नियम के समर्थन को प्रस्तुत किया। और तीसरा, उसने अपने पाठकों को उनके मसीही विश्वास में दृढ़ बने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

रहने के लिए कई उपदेश दिए। आइए लेखक की इस मान्यता के साथ आरंभ करें कि यीशु में अंतिम दिन आ पहुँचे थे।

यीशु में अंतिम दिन

अधिकतर जब मसीह के अनुयायी "अंतिम दिनों" की अभिव्यक्ति को सुनते हैं तो उनका मन सीधे महिमा में मसीह के पुनरागमन से जुड़ी घटनाओं की ओर चला जाता है। हममें से बहुत से लोग महाक्लेश, बादलों पर उठा लिए जाने, अर्थात् रैपचर, और सहस्त्राब्दी जैसी घटनाओं को समझने में बहुत समय और प्रयासों को व्यतीत करते हैं। परंतु जब हम इब्रानियों की पुस्तक के "अंतिम दिनों" के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में मसीह के दूसरे आगमन से निकटता से जुड़ी घटनाओं से कहीं बड़ी बातें होती हैं।

मसीही धर्मविज्ञानी अक्सर अंतिम दिनों पर आधारित बाइबल की शिक्षाओं को "युगांत-विज्ञान" कहते हैं। यह तकनीकी शब्द यूनानी शब्द *एस्खाटोस* (ἔσχατος) से आता है जिसका अर्थ "आखिरी" या "अंतिम" है। रोचक बात यह है कि नए नियम की यह शब्दावली पुराने नियम में "अंत के दिनों" के उल्लेख में व्यवस्थाविवरण 4:30 में ही प्रकट हो जाती है। वहाँ मूसा ने चेतावनी दी थी कि यदि इस्राएली परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं तो इस्राएल को बंधुवाई में ले जाया जाएगा। परंतु उसने उन्हें आश्वस्त किया कि यदि वे "अंत के दिनों" में पश्चाताप करें तो वे बंधुवाई से लौटकर परमेश्वर की अतुलनीय आशीषों को प्राप्त करेंगे। और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भी इस्राएल के बंधुवाई से लौटने से जुड़ी घटनाओं का वर्णन "अंत के दिनों में" घटी घटनाओं के रूप में किया।

इब्रानियों 1:1-2 में यह देखना कठिन नहीं है कि इब्रानियों की पुस्तक को लिखते समय लेखक के मन में युगांत-विज्ञान था। उस पहली बात को ही सुनिए जो उसने लिखी :

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं (इब्रानियों 1:1-2)।

ध्यान दें कि कैसे ये आरंभिक पद परमेश्वर द्वारा मसीह में किए कार्यों को "इन अन्तिम दिनों में" — या युगांत के — "दिनों में" हुई घटनाओं के रूप में दर्शाते हैं। इब्रानियों के लेखक का इससे क्या अर्थ था? उसके लिए युगांत-विज्ञान इतना महत्वपूर्ण क्यों था?

> इब्रानियों की पुस्तक के पहले पद में ही, अर्थात् मुख्य द्वार पर ही वह चाहता है कि वे यह जान लें कि यीशु ही उन सारी भविष्यवाणियों की पूर्णता है, जो उससे पहले की गई थीं। वह कहता है कि "पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं," और इसका अर्थ है कि यीशु उन सब की पूर्णता है जो उससे पहले आए। प्रभु का आना वही है, प्रभु के दिन का आना वही है, राज्य का प्रवेशद्वार वही है, और मानवीय इतिहास का अंतिम शब्द वही जो परमेश्वर कहना चाहता है; वह यीशु में पाया जाता है।
>
> — डॉ. के. एरिक थोनेस

इब्रानियों की पुस्तक के युगांत-विज्ञान को समझने कि लिए हमें पुराने नियम के अंत के निकट और पुराने और नए नियम के मध्य के समय के मार्गों और मोड़ों से होकर निकलना होगा। राजतंत्र के समय के दौरान इस्राएल परमेश्वर के विरूद्ध अधिक से अधिक विद्रोह करता चला गया। अंततः परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

ने अश्शूरियों की सेना को भेजा कि वे अधिकांश उत्तरी इस्राएलियों को बंधुवाई में ले जाएँ। बाद में, परमेश्वर ने बेबीलोन की सेनाओं को यहूदा के साथ ऐसा ही करने को भेजा। अब लगभग 538 ईसा पूर्व में इस्राएल और यहूदा के कुछ बचे हुए लोग प्रतिज्ञा की भूमि पर इस आशा से लौटे कि परमेश्वर अंतिम दिनों के न्याय और आशीषों को उंडेलेगा। परंतु बड़े पैमाने पर पश्चाताप कभी नहीं हुआ। और इसके फलस्वरूप, इस्राएल के लिए ठहराया गया कि वह आने वाली पाँच सदियों तक मादी और फारसियों, यूनानियों और अंत में रोमी साम्राज्य के अत्याचार को सहे।

पुराने और नए नियम के बीच के समय के दौरान अधिकांश यहूदी समुदाय इस आशा को दृढ़ता से थामे रहे कि परमेश्वर के अंत के दिनों के अंतिम न्याय और आशीषें आ जाएँगी। यह आशा उनके लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि उन्होंने पूरे इतिहास को दो बड़े युगों में विभाजित कर दिया। जिस समय के दौरान वे रहते थे, उसे उन्होंने “यह युग" कहा, अर्थात् पाप का युग जिसका परिणाम इस्राएल की असफलता और बंधुवाई रहा। और उन्होंने “आने वाले युग” के बारे में भी बात की, अर्थात् ऐसे समय के बारे में जब परमेश्वर उनके शत्रुओं पर अपने अंतिम दंड को और अपने विश्वासयोग्य लोगों पर अपनी अंतिम, महिमामय आशीषों को उंडेलेगा। और पुराने नियम की भविष्यवाणियों पर आधारित होकर, वे जानते थे कि परमेश्वर इस युग को आने वाले युग में परिवर्तित करने के लिए दाऊद के महान पुत्र अर्थात् मसीहा को भेजेगा।

युगांत-विज्ञान पर ध्यान देने के द्वारा इब्रानियों के लेखक ने ऐसी मान्यता को बढ़ावा दिया जिसे वह और उसके पाठक तथा वृहद् यहूदी समुदाय साझे रूप में रखते थे। परंतु साथ ही, उसने बार-बार इस ओर भी संकेत किया कि यीशु पर विश्वास करनेवाले और न करनेवाले कहाँ अलग-अलग मत रखते हैं। अविश्वासी यहूदी मानते थे कि मसीहा इस युग से उस युग में एक बड़े नाटकीय, विनाशकारी परिवर्तन को लेकर आएगा। परंतु मसीह के अनुयायियों ने यह शिक्षा पाई थी कि यीशु तीन चरणों में अंतिम दिनों को लाएगा : अपने पहले आगमन में अपने मसीहा-संबंधी राज्य का उद्घाटन, पूरे कलीसियाई इतिहास में अपने मसीहा-संबंधी राज्य की निरंतरता, और अपने मसीहा-संबंधी राज्य की पूर्णता जब वह अपनी महिमा में लौटेगा। नए नियम के लेखकों ने इन तीनों चरणों का वर्णन प्रेरितों के काम 2:17 और 2 पतरस 3:3 जैसे अनुच्छेदों में “अंतिम दिनों” के रूप में किया है।

हम इस विषय के महत्व के भाव को प्राप्त कर सकते हैं जब हम ध्यान देते हैं कि इब्रानियों के लेखक ने “अंतिम दिनों” के लिए कम से कम छ: अवसरों पर ऐसी भाषा का प्रयोग किया है। इब्रानियों 2:5 में उसने “आनेवाले जगत” के बारे में लिखा जब मसीह अपनी महिमा सहित वापस आएगा। पद 6:5 में उसने “आनेवाले युग की सामर्थ्य” का उल्लेख किया जिसका उसके पाठकों में से बहुतों ने अनुभव किया था। पद 9:11 में उसने मसीह को उन “आने वाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक” कहा जो पहले से यहाँ हैं। पद 9:26 में उसने यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई को “युग के अंत” के रूप में दर्शाया। पद 10:1 में उसने “आने वाली अच्छी वस्तुओं” के रूप में मसीह के बलिदान के फलस्वरूप मिलनेवाली आशीषों के बारे में बात की। और पद 13:14 में उसने मसीह के अनुयायियों की अंतिम आशा का वर्णन “आने वाले नगर” के रूप में किया। अंतिम दिनों का उल्लेख करने के इन जाने-पहचाने तरीकों की पुनरावर्ती हमें इस बात की झलक प्रदान करती है कि लेखक के उद्देश्य के लिए यह विषय कितना महत्वपूर्ण था।

अब जबकि हमने देख लिया है कि इब्रानियों की पुस्तक में आवर्ती बातें किस प्रकार यीशु में अंतिम दिनों के केंद्र को शामिल करती हैं, इसलिए हमें इस पुस्तक में दोहराए गए दूसरे तत्व की ओर मुड़ना चाहिए : अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के लिए लेखक का पुराने नियम से समर्थन।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

पुराने नियम से समर्थन

अधिकांश गणनाओं के अनुसार इब्रानियों की पुस्तक लगभग 100 बार पुराने नियम को या तो उद्धृत करती है या इसकी ओर संकेत करती है। लेखक के उद्देश्य के लिए पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के साथ उसका पारस्परिक वार्तालाप इतना महत्वपूर्ण था कि यह उसकी पुस्तक के प्रत्येक मुख्य भाग में पाया जाता है। और निस्संदेह, यह समझना कठिन नहीं है कि ऐसा क्यों है। स्थानीय यहूदी समुदाय की शिक्षाओं को चुनौती देने के लिए इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने एक साझे प्रलेख की ओर संकेत किया जिसे वे सब पवित्र मानते थे : अर्थात् पुराना नियम।

तथ्यात्मक पृष्ठभूमियाँ

इस अध्याय के उद्देश्यों के लिए उन पाँच मुख्य तरीकों को देखना सहायक है जिनमें इब्रानियों के लेखक ने पुराने नियम के उद्धरणों का बार-बार प्रयोग किया। सबसे पहले, उसने पुराने नियम से तथ्यात्मक पृष्ठभूमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया।

सरल शब्दों में कहें तो, लेखक ने इब्रानी पवित्रशास्त्र से कुछ ऐतिहासिक विवरणों को याद किया और कुछ शब्दों को उदधृत किया। फिर उसने मसीही विश्वास की अपनी प्रस्तुति में इन तथ्यों को जोड़ दिया। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 7:2 में उसने स्पष्ट किया कि उत्पत्ति 14:18 के "शालेम का राजा मलिकिसिदक" के नाम का अर्थ "धार्मिकता का राजा" और "शान्ति का राजा" है। इस तथ्यात्मक पृष्ठभूमि ने तब यीशु और मलिकिसिदक के साथ उसकी तुलना को विकसित किया।

एक अन्य उदाहरण के रूप में, इब्रानियों 12:20 और 21 में लेखक ने सीनै पहाड़ पर इस्राएल के डर पर ध्यान दिया जिसका वर्णन निर्गमन 19:12 और 13 तथा व्यवस्थाविवरण 9:19 में किया गया है। फिर उसने मसीह के अनुयायियों के लिए स्वर्गीय यरूशलेम के आनंद के साथ इस्राएल के डर की तुलना की।

धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण

दूसरा, लेखक ने पुराने नियम में स्थापित उन स्थिर धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों पर भी ध्यान दिया है जो उसके समय में भी प्रचलित थे।

इन विषयों में, सरल ऐतिहासिक तथ्यों पर ध्यान देने की अपेक्षा लेखक ने इब्रानी पवित्रशास्त्र में अभिपुष्ट धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं पर ध्यान केंद्रित किया — अर्थात् स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर से निकटता से संबंधित विषयों की मान्यताओं पर।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1:5 में लेखक ने 2 शमूएल 7:14 — या इसके समानांतर पद 1 इतिहास 17:13 का उल्लेख किया। यहाँ परमेश्वर ने घोषणा की कि दाऊद के राजवंश का प्रत्येक राजा दाऊद के समय से परमेश्वर का "पुत्र" कहलाएगा।

इब्रानियों 1:7, 14 में लेखक ने भजन 104:4 को उद्धृत किया जहाँ स्वर्गदूतों का वर्णन सेवा करनेवाली आत्माओं के रूप में किया गया है।

इब्रानियों 2:6-8 में उसने भजन 8:4-6 को उदधृत किया। उसने तर्क दिया कि परमेश्वर ने मनुष्यों को स्वर्गदूतों से केवल तब तक के लिए कम ठहराया है, जब मनुष्यजाति, न कि स्वर्गदूत, मसीह के साथ पूरी सृष्टि पर राज्य करेंगे।

इब्रानियों 2:13 यशायाह 8:17,18 को दर्शाता है। ये पद दर्शाते हैं कि परमेश्वर की धार्मिकता की आशीषें अब्राहम के मानवीय परिवार के सदस्यों के बीच बाँटी जाएँगी, न कि स्वर्गदूतों के बीच।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इब्रानियों 6:13, 14 में लेखक ने उत्पत्ति 22:17 से अब्राहम के प्रति परमेश्वर की शपथ को उदधृत किया। यहाँ परमेश्वर ने स्थापित किया कि अब्राहम के प्रति उसकी प्रतिज्ञा स्थाई थी, जो कि नए नियम के समयों तक भी पहुँचती है।

इब्रानियों 12:29 में लेखक ने व्यवस्थाविवरण 4:24 को उद्धृत किया जिसमें वह परमेश्वर का वर्णन एक भस्म करनेवाली आग के रूप में करता है। उसने ऐसा अपनी इस शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए किया कि परमेश्वर अब भी मसीह में भस्म करनेवाली आग है।

ऐसे ही उदाहरण इब्रानियों 4:4-7, 8:5, 9:20, 10:30-31, 10:38 और 13:5 में पाए जाते हैं। इन सब अनुच्छेदों में इब्रानियों के लेखक ने बल दिया कि पुराने नियम में स्थापित कुछ धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण नए नियम के समयों में भी निरंतर प्रचलन में बने हुए हैं।

> इब्रानियों का लेखक इसी बात पर बल देता है कि यीशु पुराने नियम से श्रेष्ठ है, फिर भी इब्रानियों का लेखक किसी भी तरह से पुराने नियम के महत्व को कम नहीं करता और न ही कहता है कि इसे छोड़ दिया जाना चाहिए; वह यह भी नहीं कहता कि हमें अब इसे पढ़ने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारे पास यीशु है। इसका कहीं अंशमात्र भी संकेत नहीं है। इब्रानियों का लेखक हर जगह पुराने नियम को उचित सम्मान देता है; वह समझता है कि यह परमेश्वर का वचन है। और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि पुराना नियम ही उन सब श्रेणियों को स्थापित करता है जो इस बात का भाव देती हैं कि यीशु कौन है। यीशु एक महायाजक है। महायाजक कौन होता है? यह पुराने नियम में स्थापित है। वह बलिदान चढ़ाता है। लहू का क्या अर्थ है? मिलापवाले तंबू में अति पवित्र स्थान का क्या अर्थ है? हाँ, अब इब्रानियों में यह मिलापवाला स्वर्गीय तंबू है, परंतु उसे पहले से ही पृथ्वी के मिलापवाले तंबू के द्वारा फिर बाद में सुलैमान के मंदिर के द्वारा एक श्रेणी के रूप में स्थापित किया गया है। इसलिए यहाँ तक व्यक्तिगत स्तर पर भी बहुत सी श्रेणियाँ पुराने नियम के द्वारा विश्वास के प्रमाण के रूप में स्थापित हैं, उदाहरण के लिए, इब्रानियों 11, या इब्रानियों 3 में उन लोगों का बुरा उदाहरण जो जंगल में मारे गए। यह सब पुराने नियम से लिया गया है।
>
> — डॉ. डी. ए. कारसन

नैतिक दायित्व

तीसरा, इब्रानियों के लेखक ने स्थाई नैतिक दायित्वों पर भी ध्यान दिया। इन विषयों में लेखक ने दर्शाया कि परमेश्वर ने पुराने नियम के समय में अपने लोगों से कुछ नैतिक मांगों को रखा था। और इन्हीं दायित्वों को नए नियम के समय में भी परमेश्वर के लोगों के मानक बने रहना था।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 3:7-15 में उसने दर्शाया कि भजन 95:7-11 ने इस्राएल को परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह न करने की शिक्षा दी।

इब्रानियों 12:5,6 ने दर्शाया कि नीतिवचन 3:11, 12 ने इस्राएल से आग्रह किया कि वे तब निराश न हों जब परमेश्वर उन्हें ताड़ना देता है।

इब्रानियों 12:13 ने उसके पाठकों को नीतिवचन 4:26 का अनुसरण करने और धार्मिकता के मार्ग पर बने रहने का निर्देश दिया।

और भजन 118:6-7 को उदधृत करने के द्वारा लेखक ने इब्रानियों 13:6 में अपने पाठकों से परमेश्वर में अपने विश्वास की घोषणा करने का आग्रह किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इन सभी उल्लेखों ने दर्शाया कि पुराने नियम के नैतिक दायित्व मसीह के अनुयायियों के लिए भी निरंतर महत्वपूर्ण बने रहते हैं।

युगांत-संबंधी भविष्यवाणियाँ

चौथा, लेखक ने पुराने नियम से कई युगांत-संबंधी भविष्यवाणियों को उदधृत किया।

कई अनुच्छेदों में पुराने नियम के लेखकों ने "अंतिम दिनों" के बारे में भविष्यवाणियाँ कीं। उन्होंने लिखा कि परमेश्वर उस समय क्या करेगा जब इस्राएल की बंधुवाई का अंत होगा और परमेश्वर का विजयी राज्य पूरे जगत में फैल जाएगा। इब्रानियों के लेखक ने यह दिखाने के लिए पुराने नियम की कई युगांत-संबंधी भविष्यवाणियों का प्रयोग किया कि परमेश्वर के अंतिम न्याय और आशीषें मसीह में पूरी होती हैं।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1:6 ने व्यवस्थाविवरण 32:43 को वैसे उद्धृत किया जैसा यह सेप्टुआजिंत, अर्थात् पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में पाया जाता है। यह पद कहता है कि स्वर्गदूत तब दीन आराधना में दंडवत् करेंगे जब परमेश्वर अपने सारे शत्रुओं पर अंतिम विजय प्राप्त करेगा।

इसी प्रकार, इब्रानियों 1:10-12 में लेखक ने भजन 102:25-27 को उदधृत किया। यह अनुच्छेद भविष्यद्वाणी करता है कि सृष्टि की वर्तमान अवस्था, जिसमें स्वर्गदूतों को आदर मिलता है, इतिहास के अंत में नष्ट हो जाएगी।

इब्रानियों 1:13 यह दर्शाने के लिए भजन 110:1 को उदधृत करता है कि दाऊद के द्वारा अपने महान पुत्र की सार्वभौमिक संप्रभुता की भविष्यवाणी मसीहा को स्वर्गदूतों से ऊँचा स्थान देती है।

इब्रानियों 5:6 और 7:17 में लेखक ने भजन 110:4 का उल्लेख किया। उसने इस भविष्यवाणी पर बल दिया कि दाऊद का महान पुत्र राजकीय महायाजक होने के अपने पद को अपने आप नहीं लेगा, बल्कि वह उसे परमेश्वर की ओर से प्राप्त करेगा।

इब्रानियों 8:8-12 में लेखक ने यिर्मयाह 31:31-34 की ओर संकेत किया। इन पदों ने भविष्यवाणी की कि इस्राएल की बंधुआई के बाद मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा में नई वाचा मानवीय असफलता की समस्या पर विजय प्राप्त करेगी।

इब्रानियों 10:16,17 यह दिखाने के लिए फिर से यिर्मयाह 31 को दर्शाता है कि नई वाचा किस प्रकार मसीह में भविष्य के बलिदानों की आवश्यकता को समाप्त कर देती है।

इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 7:21, 10:37 और 12:26 में अंतिम दिनों, या युगांत-संबंधी युग के विषय में ऐसी ही भविष्यवाणियों को दर्शाया।

राजवंशीय आदर्श

पाँचवां, लेखक ने ऐसे कई राजवंशीय आदर्शों का उल्लेख किया जो भजन संहिता में दाऊद की वंशावली के लिए स्थापित किए गए थे।

ये अनुच्छेद दाऊद के राजवंश में सब लोगों के लिए विश्वासयोग्यता और परमेश्वर के प्रति सेवा के मानकों को व्यक्त करते हैं। परंतु अपने सर्वोत्तम प्रयासों में भी दाऊद के पुराने नियम के वंशज अपूर्ण रूप में ही इन मानकों तक पहुँच पाए। इब्रानियों के लेखक ने बल दिया कि दाऊद के राजकीय घराने के आदर्शों की सर्वोच्च, सिद्ध पूर्णता यीशु ही है।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1:5 में लेखक ने भजन 2:7 और 2 शमूएल 7:14 को उदधृत किया। ये पद दर्शाते हैं कि परमेश्वर ने वासल राष्ट्रों पर शासन करने के लिए अपने राजकीय पुत्र के रूप में दाऊद के एक वंशज को नियुक्त किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इब्रानियों 1:8, 9, भजन संहिता 45:6, 7 को उदधृत करता है। राजकीय विवाह का यह भजन दाऊद के राजवंश में एक ऐसे राजा को सम्मानित करने के द्वारा सब लोगों पर परमेश्वर के राज्य को ऊँचा उठाता है जो धार्मिकता से प्रेम करता है और दुष्टता से घृणा करता है।

इब्रानियों 2:11-12 में लेखक ने भजन 22:22 को उदधृत किया। इस पद में दाऊद ने अन्य इस्राएलियों की मंडली में अपनी धार्मिकता के आनंद को बांटने की प्रतिज्ञा की। लेखक ने यह दर्शाने के लिए इस पद का प्रयोग किया कि यीशु अब्राहम की संतान के साथ अपनी धार्मिकता को बांटने के द्वारा इस राजवंशीय आदर्श को सिद्धता के साथ पूरा करता है।

इब्रानियों 10:5-7 में लेखक ने भजन 40:6-8 का उल्लेख किया। इन पदों में दाऊद ने जानवरों के बलिदानों के स्थान पर अपने पूरे शरीर को समर्पित करने की प्रतिज्ञा की। लेखक ने इसे यीशु पर लागू किया जिसका क्रूस पर शारीरिक बलिदान इस आदर्श की सर्वोच्च, युगांत-संबंधी पूर्णता था।

यहाँ तक हमने इब्रानियों की आवर्ती बातों को देखा है जिनमें यीशु में अंतिम दिन और लेखक के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के लिए पुराने नियम का समर्थन शामिल था। अब हम दोहराए जानेवाले तीसरे तत्व को संक्षेप में देखने की स्थिति में हैं : दृढ़ बने रहने के लिए लेखक के उपदेश।

दृढ़ बने रहने के लिए उपदेश

> इब्रानियों के पत्र का लेखक अपने पाठकों को दृढ़ बने रहने के लिए कई तरीकों से प्रेरित करता है। वहाँ पुराने नियम से बहुत सारे उद्धरण पाए जाते हैं, और वे सब यह अनुमान लगाते हैं कि परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करना जारी रखा है, और मुख्य रूप से इन अंतिम दिनों में, अपने पुत्र को भेजने के द्वारा। विश्वासयोग्यता के साथ सताव को सहनेवाले लोगों, विशेषकर इब्रानियों 11 के लोगों के उदाहरण दृढ़ता के एक बड़े नमूने के रूप में दिए गए हैं। और निस्संदेह विशेष रूप से स्वयं मसीह ने "उस [महिमा] के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा" ताकि वह स्वर्ग को प्राप्त करे — इसे मसीहियों के लिए एक नमूने के रूप में दिया गया है कि वे आज भी इसका अनुसरण करें।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

अपने पिछले अध्याय में हमने उल्लेख किया था कि इब्रानियों 13:22 में इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपनी पूरी पुस्तक का वर्णन "मेरे उपदेश की बातों" के रूप में किया था। और यह इस पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे गिनते हैं, इब्रानियों में लगभग 30 स्पष्ट उपदेश पाए जाते हैं। जैसा कि हम देखेंगे कि प्रत्येक उपदेश ने एक विशेष विषय को छुआ, परंतु उन सब की रचना मूल पाठकों को मसीह के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता में दृढ़ करने की बुलाहट देने के लिए की गई थी।

हमारे अध्याय के इस बिंदु पर हम दृढ़ बने रहने के लेखक के उपदेशों की दो महत्वपूर्ण विशेषताओं की ओर देखना चाहते हैं। पहली, हम उन प्रत्युत्तरों पर कुछ टिप्पणियाँ करेंगे जिनकी अपेक्षा लेखक ने अपने पाठकों से रखी थी। और दूसरी, हम ध्यान देंगे कि कैसे उसने दृढ़ बने रहने के लिए अपने पाठकों को प्रेरणाएँ प्रदान कीं। आइए पहले हम प्रत्युत्तरों की उस श्रेणी को देखें जिन्हें लेखक उभारना चाहता था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

प्रत्युत्तर

इब्रानियों की पुस्तक की एक महत्वपूर्ण विशेषता उन प्रत्युत्तरों की विशालता है जिन्हें लेखक ने अपने पाठकों से प्रेरित किया। अब, जब हम नए नियम की यूनानी भाषा जैसी किसी प्राचीन भाषा के साथ कार्य करते हैं, तो कुछ विशेष अभिव्यक्तियों के अर्थ की बारीकियों को पहचानना अक्सर असंभव होता है। इसलिए हम अपने आप को अपेक्षाकृत कुछ स्पष्ट उदाहरणों तक ही सीमित रखेंगे। सामान्य रूप में, लेखक के उपदेशों ने उसके पाठकों को उत्साहित किया कि वे उसकी पुस्तक को भावनात्मक, धारणात्मक और व्यवहारात्मक रूप में लागू करें। मूल पाठकों के दृढ़ बने रहने के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे प्रत्युत्तरों की इस विशाल श्रेणी की ओर ध्यान दें।

पहला, इब्रानियों के लेखक ने अक्सर अपने पाठकों को उनके विश्वास के भावनात्मक पहलुओं में उपदेश दिया। इब्रानियों 3:8, 15 में वह कहता है, "अपने मनों को कठोर न करो।" इसी अध्याय के पद 13 में हम पढ़ते हैं, "हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।" इन्हीं से मिलते-जुलते विचारों के साथ, अध्याय 4:1 में उसने यह कहा, "हम सावधान रहें" या शाब्दिक रूप से "इसलिये हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि कोई जन उसके विश्राम में प्रवेश करने से वंचित रह जाए।" उसने पद 4:16 में अपने पाठकों को "हियाव बाँधने" या साहस रखने के लिए उत्साहित किया जब वे सहायता पाने के लिए उसके अनुग्रह के सिंहासन के निकट जाते हैं। उसने पद 10:22 में उसने उन्हें बुलाया कि वे "सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ ... परमेश्वर के समीप जाएँ।" और पद 10:35 में उसने उन्हें उपदेश दिया कि "अपना हियाव न छोड़ो।"

ये भावनात्मक बल इब्रानियों के लेखक के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे, परंतु साथ ही उसने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे उसकी लिखी बातों को धारणात्मक स्तर पर लागू करें। वह चाहता था कि उसके प्रेरित शब्द उनके धर्मवैज्ञानिक सिद्धांतों और मान्यताओं को प्रभावित करें। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 2:1 में उसने अपने पाठकों से कहा कि जो बातें उन्होंने सुनी हैं उन पर "और भी मन लगाएँ।" पद 3:1 में लेखक ने उनसे आग्रह किया कि वे यीशु पर "ध्यान करें।" और पद 6:1 में उसने उन्हें उत्साहित किया कि वे "मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर" समझ और ज्ञान में बढ़ते जाएँ।

रोचक बात यह है कि इब्रानियों के लेखक ने आरंभ ही में विशेष व्यावहारात्मक तत्वों पर बल नहीं दिया। निश्चित रूप से उसके उपदेशों में आम तौर पर व्यावहारिक पहलू होते थे, परंतु उसके अधिकांश व्यावहारिक उपदेश उसकी पुस्तक के अंत में पाए जाते हैं। इब्रानियों 12:16 में उसने अपने श्रोताओं को यह उपेदश दिया कि "ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी ... हो।" और अध्याय 13:1-19 में उसने अतिथि-सत्कार, विवाह, मसीह के नाम का अंगीकार करना, और भलाई करना जैसे विषयों को संबोधित किया।

उपदेशों की यह श्रेणी उन विभिन्न तरीकों को दर्शाती है जिनका प्रत्युत्तर इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों से चाहता था। स्पष्ट रूप से, यदि वे मसीह की विश्वासयोग्य सेवकाई के प्रति दृढ़ बने रहना चाहते थे तो उन्हें अपनी भावनाओं, धारणाओं और व्यवहारों के प्रति जागरूक होने की जरूरत थी।

हमने देखा है कि दृढ़ बने रहने के इब्रानियों के लेखक के उपदेशों ने कई प्रत्युत्तरों को प्रेरित किया। अब हमें ध्यान देना चाहिए कि लेखक ने दृढ़ बने रहने को प्रोत्साहित करने के लिए सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रेरणाओं को कैसे प्रोत्साहित किया।

प्रेरणाएँ

एक ओर, लेखक ने अपने बहुत से उपदेशों को सकारात्मक प्रेरणाओं के साथ बड़ी गहराई से जोड़ा। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 4:13-16 में वह मसीह से अनुग्रह और सहायता को प्राप्त करने का वर्णन करता है। और पद 13:16 में उसने अपने पाठकों को उस ज्ञान के साथ प्रेरित करने का प्रयास

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

किया कि कुछ कार्य परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। इब्रानियों के लेखक ने समय-समय पर विश्वासयोग्य जीवन जीने की प्रेरणा के रूप में अनंत फलों को दर्शाया। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 10:35 में उसने यह कहा :

> अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है (इब्रानियों 10:35)।

परंतु दूसरी ओर, इब्रानियों के लेखक ने अक्सर अपने पाठकों को प्रेरित करने के लिए नकारात्मक प्रेरणाओं का प्रयोग किया। ये उपदेश मुख्य रूप से ईश्वरीय दंड के खतरे और चेतावनियाँ थे। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 2:2-3 में उसने ध्यान दिया कि जिन्होंने स्वर्गदूतों की आज्ञा नहीं मानी उन्हें दंड दिया गया। इसलिए, मसीह में उद्धार के वचन को नजरअंदाज करनेवाला किस प्रकार परमेश्वर के दंड से बचने की अपेक्षा कर सकता है? पद 6:4-8 में उसने सचेत किया कि जो कोई पाप में पड़ चुका है वह "स्रापित होने पर है।" पद 10:26-31 में उसने चेतावनी दी कि "दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।"

> इब्रानियों की पुस्तक का एक महत्वपूर्ण विषय दृढ़ बने रहने की आवश्यकता का है। ऐसा नहीं हो सकता कि आप इब्रानियों की पुस्तक की चेतावनियों और उपदेशों को तो पढ़ें और लेखक के द्वारा उनसे अपने प्रचार के दौरान यह कहने पर ध्यान न दें कि उन्हें दृढ़ बने रहने की आवश्यकता है; उन्हें आगे बढ़ने की आवश्यकता है; उन्हें पीछे हटने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि मसीही जीवन में आगे की ओर बढ़ते रहने की आवश्यकता है। अब, वह ऐसा कैसे करता है? मेरे विचार से वह बड़ी सुंदरता से प्रोत्साहनों और चेतावनियों के बीच संतुलन बनाता है, और ये एक तरह से एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रोत्साहन के संदर्भ में इब्रानियों की पुस्तक बार-बार मसीह और पुराने नियम के चरित्रों, लोगों, वाचाओं की तुलना करने में प्रसिद्ध है। वह मूसा से श्रेष्ठ है; वह एक श्रेष्ठ विश्राम को लाता है; वह एक श्रेष्ठ याजक है; उसके पास एक बेहतर बलिदान है... यद्यपि सिक्के के दूसरी ओर चेतावनियाँ भी हैं। इब्रानियों की पुस्तक में चेतावनियाँ मसीही श्रोताओं और पाठकों को यह कहने में सचेत करने का कार्य करती हैं, "यदि मैं दृढ़ नहीं बना रहता, यदि मैं निरंतर मसीह के साथ चलता नहीं रहता और उसकी ओर देखता नहीं रहता कि वह अपनी महिमा और तेज में कौन है — कि वह महिमा का प्रभु, महान महायाजक है जो आया है — और इन सब बातों पर ध्यान देते हुए, तो उससे बाहर कोई उद्धार नहीं है ... इसलिए दोनों एक साथ मिलकर सकारात्मक प्रोत्साहन देते हैं, और साथ ही दौड़ में दौड़ते रहने के लिए नकारात्मक दृढ़ता प्रदान करते हैं ताकि हम अपनी आँखें हमारे विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु पर लगाए रखें।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेलम

इब्रानियों के पाठकों के विरूद्ध दंड के खतरे अक्सर व्याख्याकारों को परेशान कर देते हैं क्योंकि वे ऐसा दर्शाते प्रतीत होते हैं कि मानो सच्चे विश्वासी अपने उद्धार को खो सकते हैं। इसी कारण, इब्रानियों की पुस्तक के ये भाग अक्सर ऐसे मसीहियों के बीच युद्धभूमि बनते रहे हैं जो इस विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोणों को रखते हैं। यद्यपि समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम इस धर्मवैज्ञानिक विषय पर यहाँ गहराई से चर्चा करें, परंतु फिर भी इस विषय के दो महत्वपूर्ण पहलुओं पर टिप्पणी करना सहायक होगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

पहला, हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि इब्रानियों की पुस्तक एक तकनीकी विधिवत धर्मविज्ञान की पुस्तक नहीं है। ऐसा कहने के द्वारा हमारा अर्थ है कि अक्सर पवित्रशास्त्र शब्दावली का प्रयोग, यहाँ तक कि उद्धार से संबंधित शब्दावली का प्रयोग मसीही धर्मविज्ञानियों और धर्मवैज्ञानिक परंपराओं से भी अधिक विविध रूप में करता है। वास्तव में, कलीसिया की प्रत्येक शाखा कुछ धर्मवैज्ञानिक शब्दावलियों का प्रयोग उन कई तरीकों से भी अधिक संकीर्ण रूप में करना चाहती है जिनका प्रयोग पवित्रशास्त्र में किया गया है। यदि हम असमंजस में पड़े बिना धर्मवैज्ञानिक प्रणालियों को प्राप्त करने की आशा रखते हैं तो रीति को अपनाना लगभग अपरिहार्य होगा। फिर भी, यह तरीका भी खतरनाक है क्योंकि इब्रानियों जैसी पुस्तक में में शब्दों की अपनी परिभाषाओं और अभिव्यक्तियों को पढ़ना सरल होता है। यह खतरा विशेष रूप से स्पष्ट हो जाता है जब बात उस तरीके को समझने की आती है जिसमें इब्रानियों के लेखक ने ऐसे लोगों का वर्णन किया जो अधर्मी बन गए, या जो मसीह से पीछे हट गए।

एक ओर, इस बात पर ध्यान देना सहायक है कि इब्रानियों के लेखक ने कभी अधर्मियों का वर्णन "धर्मी ठहराए गए" लोगों के रूप में नहीं किया। नए नियम में यह सच्चे विश्वासियों के लिए नियमित रूप से अरक्षित किया गया है। परंतु दूसरी ओर, इब्रानियों के लेखक ने कुछ ऐसी शब्दावली का प्रयोग भी किया जिन्हें सुसमाचारिक लोग अक्सर केवल सच्चे विश्वासियों के लिए ही करते हैं, चाहे नया नियम ऐसा न भी करता हो। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 6:4-6 में लेखक ने चेतावनी दी :

> **जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं, और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं ... भटक [सकते हैं] (इब्रानियों 6:4-6)।**

कठिनाई यहाँ पर यह है कि हम में से बहुत से अपनी तकनीकी धर्मवैज्ञानिक शब्दावली में केवल सच्चे विश्वासियों का वर्णन करने के लिए इन या इन जैसी अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। इसके अन्य उदाहरणों में इब्रानियों 10:29 शामिल है जहाँ अधर्मियों का वर्णन वाचा के लहू के द्वारा "पवित्र" लोगों के रूप में किया गया है। या पद 10:32 कहता है कि उन्होंने "ज्योति" को प्राप्त किया था।

वास्तव में, ऐसे ही विवरणों का प्रयोग नए नियम में उनके लिए किया गया है जो उसमें भाग लेते हैं जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "दृश्य कलीसिया" कहते हैं। यह "अदृश्य कलीसिया" से बिल्कुल अलग है। दृश्य कलीसिया के लोग वे हैं जो बाहरी तौर पर कलीसिया के भाग हैं परंतु आवश्यक नहीं कि आंतरिक रूप से भी हों। कलीसिया में यह अंतर उस तरीके के समान है जिसमें रोमियों 2:28, 29 "बाहरी तौर पर" — यूनानी में *फानेरोस* (φανερός) — बाहरी, भौतिक रूप से खतने को पाए हुए यहूदी लोगों और "आंतरिक रूप से" — यूनानी में *क्रुपटोस* (κρυπτός) — मन के खतने को पाए हुए यहूदियों के बीच अंतर करता है।

दूसरा, हमें सदैव याद रखना चाहिए कि अधार्मिकता के लिए ईश्वरीय दंड का खतरा इब्रानियों के लिए विशेष नहीं है। उदाहरण के लिए, हम ऐसी चेतावनियाँ 1 कुरिन्थियों 10:1-13 और 2 पतरस 2:21, 22 जैसे अनुच्छेदों में पाते हैं। संपूर्ण नया नियम यह सिखाता है कि जिनके पास मसीह में उद्धार देनेवाला विश्वास है, वे अंत तक बने रहेंगे। परंतु जो मसीह को पूरी तरह से ठुकरा देते हैं वे यह दिखाते हैं कि उनका विश्वास उद्धार देनेवाला विश्वास नहीं था। इसकी अपेक्षा, उनका विश्वास केवल वही था जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "अस्थाई" या "कपटी विश्वास" कहते हैं। जैसे कि 1 यूहन्ना 2:19 में अधर्मी के विषय में स्पष्ट करता है :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं, क्योंकि यदि वे हम में के होते, तो हमारे साथ रहते; पर निकल इसलिए गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं (1 यूहन्ना 2:19)।

जब भी कोई मसीही विश्वास से पीछे हट जाता है, तो वह यह दर्शाता है कि वह वास्तव में अदृश्य कलीसिया का था ही नहीं।

> इब्रानियों में पाँच चेतावनी संबंधी अनुच्छेद हैं ... हम में से अधिकांश यह तर्क देते और निष्कर्ष निकालते हैं कि इन पाँचों का वास्तव में एक ही विषय है, और इसलिए हम चेतावनियों को, बहुवचन में, इस प्रकार संबोधित कर सकते हैं कि मानो उनका एक ही मुख्य उद्देश्य हो। और पास्तरीय रूप से उनका उद्देश्य बड़ा ही साधारण है। वह चाहता है कि उसकी मंडली के सब लोग दृढ़ बने रहें और मसीह का अनुसरण करें। अब वास्तव में कुछ बातें हैं जिन्हें कहा जाना चाहिए। ये वास्तविक चेतावनियाँ हैं। ये काल्पनिक नहीं हैं। उन्हें डराने की रणनीति के तहत नहीं रखा गया है ... परंतु जिस बात को रखा जाना जरूरी है वह यह है, वह उनसे ऐसे बात कर रहा है जैसे एक पास्टर रविवार की सुबह अपनी मंडली को संबोधित करता है। परंतु वह सर्वज्ञानी नहीं है। वह अपनी मंडली के सब लोगों की अनंत दशा को नहीं जानता है। वह जानता है कि वे मसीह का नाम लेते हैं, परंतु नए नियम के धर्मविज्ञान में वास्तव में, समय आने पर ही सब कुछ पता लगेगा। मेरे कहने का अर्थ है कि, हम वास्तव में 1 यूहन्ना 2:19 में उन लोगों के एक उदाहरण को देखते हैं, जिन्होंने विश्वास को त्याग दिया, विश्वास के समुदाय को छोड़ दिया और बाहर जाने के द्वारा यह दर्शाया कि वे वास्तव में हमें में से एक थे ही नहीं; यूहन्ना आसिया की कलीसिया को यह लिखता है। और इस प्रकार, हम यहाँ इब्रानियों की पुस्तक में में देखते हैं कि वह उन्हें संबोधित कर रहा है जो मसीह का नाम लेते हैं, परंतु वास्तव में यह समय ही बताएगा कि वे उसे जानते हैं या नहीं।
>
> — डॉ. बैरी जोसलिन

इब्रानियों की पुस्तक की विषय-वस्तु और संरचना पर आधारित अपने अध्याय में हमने इस पुस्तक के आवर्ती विषयों के तीन तत्वों को देख लिया है। आइए अब हम अपने अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ें : इब्रानियों की पुस्तक की आलंकारिक संरचना।

आलंकारिक संरचना

जैसा कि हमने अपने पिछले अध्याय में देखा था, इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक सताव का सामना कर रहे थे। स्थानीय यहूदी समुदाय की झूठी शिक्षाओं को स्वीकार करने की परीक्षा व्यापक रूप से फैली हुई थी। और इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को यह समझाने के लिए लिखा कि वे हार न मानें और इन शिक्षाओं के कारण मसीह से दूर न हो जाएँ। अतः इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए किस प्रकार अपनी पुस्तक की विषय-सूची को एकसूत्र में पिरोया? यह आलंकारिक सरंचना कैसी दिखाई देती है?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

हम इब्रानियों की आलंकारिक संरचना को कई स्तरों पर देख सकते हैं, परंतु अपने उद्देश्यों के लिए, हम इस पुस्तक के केवल पाँच मुख्य विभाजनों को देखेंगे। ये विभाजन हमें एक ऐसे भाव को प्राप्त करने में सहायता करते हैं कि लेखक ने अपने पाठकों को मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रेरित करने हेतु कैसे प्रयास किया।

- पहला मुख्य विभाजन 1:1-2:18 में स्वर्गदूतों के प्रकाशनों के विषय में मान्यताओं पर ध्यान देता है।
- दूसरा मुख्य विभाजन 3:1-4:13 में मूसा के अधिकार पर चर्चा करता है।
- तीसरा मुख्य विभाजन 4:14-7:28 में मलिकिसिदक के राजकीय महायाजक के पद को संबोधित करता है।
- चौथा मुख्य विभाजन 8:1-11:40 में नई वाचा पर ध्यान केंद्रित करता है।
- पाँचवा मुख्य विभाजन 12:1-13:25 में व्यावहारिक दृढ़ता के बारे में बात करता है।

स्वर्गदूतों के प्रकाशन (1:1-2:18)

इब्रानियों के लेखक ने इन सब मुख्य खंडों का प्रयोग अपने पाठकों को यह समझाने के लिए किया कि वे सताव को सहते हुए भी मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। आइए पहले हम यह देखें कि 1:1-2:18 में इब्रानियों की पुस्तक ने स्वर्गदूतों के प्रकाशनों के साथ कैसे व्यवहार किया।

जैसा कि हमने अपने पिछले अध्याय में उल्लेख किया था, कुमरान से प्राप्त कई यहूदी हस्तलेख, और साथ ही इफिसियों और कुलुस्सियों जैसी पुस्तकें दर्शाती हैं कि पहली सदी में यहूदी समुदाय अक्सर स्वर्गदूतों को सामर्थी, महिमामय प्राणी मानते थे जो तुच्छ मनुष्यों के लिए ईश्वरीय प्रकाशन लेकर आते थे।

स्थानीय यहूदी समुदाय के दृष्टिकोण बाइबल पर आधारित अनुच्छेदों में निहित थे, परंतु उन्होंने स्वर्गदूतों को जरूरत से अधिक सम्मान दिया। स्वर्गदूतों के इस अतिशयोक्तिपूर्ण सम्मान ने मसीह का अनुसरण करनेवालों के सामने एक गंभीर चुनौती पेश की। आखिरकार, प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि यीशु लहू और माँस में एक मानवीय प्राणी था। फिर स्वर्गदूतों के प्रकाशनों के स्थान पर उसने जो कहा, उसका अनुसरण कोई कैसे कर सकता है?

इब्रानियों के लेखक ने इस चुनौती का उत्तर पाँच चरणों में दिया। पहला, इब्रानियों 1:1-4 में उसने लिखा कि उसके पाठकों को यीशु का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि यीशु परमेश्वर के ईश्वरीय प्रकाशन का सर्वोच्च स्रोत है। लेखक ने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने पूरे पुराने नियम के इतिहास के दौरान स्वर्गदूतों और अन्य माध्यमों के द्वारा बात की। परंतु उसने बल दिया कि अंतिम दिनों के ईश्वरीय रूप से ठहराए हुए राजकीय महायाजक के रूप में यीशु उस प्रकाशन को लेकर आया जो स्वर्गदूतों के द्वारा दिए किसी प्रकाशन से श्रेष्ठ था।

पद 1:5-14 में इब्रानियों के लेखक ने समझाया कि यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है क्योंकि केवल वही परमेश्वर का मसीहारूपी पुत्र है। उसने ध्यान दिया कि यीशु ने दाऊद के घराने के आदर्शों को पूरा किया। और यीशु ने परमेश्वर के सब शत्रुओं पर परमेश्वर के मसीहारूपी पुत्र की विजय से संबंधित दाऊद की भविष्यवाणी को भी पूरा किया। इसके विपरीत, उसने ध्यान दिया कि स्वर्गदूत उन आत्माओं से अधिक कुछ नहीं हैं जिन्हें मसीह में उद्धार पाए हुओं की सेवा करने के लिए भेजा गया है।

पद 2:1-4 में लेखक ने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे यीशु के द्वारा सबसे पहले सुनाए गए उद्धार के महान संदेश के प्रति पूरा ध्यान दें। उसने उन्हें याद दिलाया कि अतीत में स्वर्गदूतों के संदेशों के उल्लंघन का परमेश्वर न्यायसंगत दंड देता था। अतः उसके पाठकों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

मसीह, जो हमारा उद्धार है, के द्वारा प्रकाशित महान उद्धार को अनदेखा करके परमेश्वर के दंड से बच सकते हैं।

इब्रानियों 2:5-9 यह समझाने के द्वारा मसीह की सर्वश्रेष्ठता की मान्यता का समर्थन करता है कि यीशु अब स्वर्गदूतों के ऊपर न्यायी है। और भविष्य में सब विश्वासी उसके साथ उन पर राज्य करेंगे। लेखक ने ध्यान दिया कि परमेश्वर ने अस्थाई रूप से मनुष्यजाति को स्वर्गदूतों से थोड़ा सा कम करके बनाया है, परंतु उसने मनुष्य को आने वाले संसार में सारी सृष्टि पर राज्य करने के लिए ठहराया है। मनुष्यों को दी गई यह अंतिम महिमा परमेश्वर के राजकीय महायाजक के रूप में स्वर्ग में मसीह के वर्तमान राज्य में प्रकट होती है।

और अंततः, इब्रानियों 2:10-18 में लेखक ने दर्शाया कि यीशु अब्राहम का वंशज है। और यीशु अपनी महिमा को अब्राहम के वंशजों के साथ साझा करेगा, न कि स्वर्गदूतों के साथ। लेखक ने अब्राहम की वंशावली के साथ यीशु के संबंध को दिखाने के लिए इस भाग में दाऊद और यशायाह को उदधृत किया। उसने यह भी समझाया कि अपने मनुष्यत्व में यीशु ने उस बड़े गिरे हुए स्वर्गदूत, अर्थात् शैतान की शक्ति को तोड़ डाला। उसने ऐसा स्वर्गदूतों को स्वतंत्र करने के लिए नहीं, बल्कि अब्राहम के वंशजों को मृत्यु के डर से स्वतंत्र करने के लिए किया। मसीह के मनुष्यत्व ने उसे दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बनाया जिसने अपने लोगों के पापों के लिए बलिदान दिया।

मूसा का अधिकार (3:1-4:13)

यह देख लेने के बाद कि कैसे इब्रानियों के लेखक ने स्वर्गदूतीय प्रकाशनों के बारे में यहूदी शिक्षाओं के साथ व्यवहार किया, अब हमें इस पुस्तक के दूसरे मुख्य विभाजन की ओर मुड़ना चाहिए। इब्रानियों 3:1-4:13 में उसने मूसा के अधिकार के विषय में चुनौतियों का उत्तर दिया। इस्राएल में उतना सम्मान किसी मनुष्य को नहीं दिया जाता जितना कि मूसा को।

मूसा को दिए गए सम्मान के कारण हमें वास्तव में स्थानीय यहूदी शिक्षाओं के कारण चकित नहीं होना चाहिए। उन्होंने इब्रानियों के पाठकों को चुनौती दी कि वे मसीह से अलग होकर उन सब बातों का पालन करें जो मूसा के द्वारा प्रकट हुई हैं। जैसा कि हम इस खंड में देखेंगे, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने मूसा को भी सम्मान प्रदान किया। यद्यपि मूसा परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक था, फिर भी यीशु उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ था क्योंकि वह अंतिम दिनों का परमेश्वर का राजकीय महायाजक था।

पुस्तक का यह भाग तीन मुख्य खंडों में विभाजित होता है, जिनमें से प्रत्येक में कम से कम एक ऐसा उपदेश है जो यीशु के अधिकार को मूसा के अधिकार से ऊँचा दिखाता है। इब्रानियों 3:1-6 में पाया जानेवाला पहला खंड स्पष्ट रूप से इब्रानियों के पाठकों को मूसा से अधिक यीशु को सम्मान देने को कहता है। यह खंड दर्शाता है कि मूसा ने परमेश्वर के भवन, अर्थात् मिलापवाले तंबू का निर्माण किया। परंतु परमेश्वर के राजकीय पुत्र के रूप में यीशु परमेश्वर के भवन, अर्थात् कलीसिया पर राज्य करता है।

इब्रानियों 3:1-3 को सुनिए जहाँ लेखक ने अपने पाठकों को यह कहते हुए उपदेश दिया :

> **यीशु पर... ध्यान करो... [जो] मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है (इब्रानियों 3:1-3)।**

लेखक ने बल दिया कि मूसा के समान यीशु परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था, परंतु यीशु उससे "बढ़कर महिमा के योग्य" था।

इन पदों के बाद, 3:7-19 में लेखक ने अपने पाठकों को हृदय की कठोरता और उन इस्राएलियों के समान विद्रोह से बचने की चेतावनी दी, जिन्होंने मूसा के विरूद्ध विद्रोह किया था। लेखक ने यह दर्शाने के द्वारा इस उपदेश का समर्थन किया कि मूसा का अनुसरण करनेवाले अधिकांश लोग प्रतिज्ञा के देश में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

प्रवेश नहीं कर पाए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया था। लगभग इसी प्रकार, जो मसीह का अनुसरण करते हैं वे केवल तभी मसीह में सहभागी होंगे यदि वे अंत तक अपने मूल विश्वास को मजबूती से पकड़े रहते हैं। अविश्वास ने इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश से बाहर रखा; अविश्वास मसीह में भी ऐसा ही करेगा।

इब्रानियों 4:1-13 में लेखक ने मसीह का अनुसरण करने और मूसा का अनुसरण करने के बीच तुलना का विस्तार से वर्णन किया। उसने अपने पाठकों को परमेश्वर के विश्राम में पहुँचने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए उत्साहित किया। पुराने नियम का प्रयोग करते हुए उसने समझाया कि परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करना भविष्य की बात है। इसलिए उन्हें अपने मन में बसा लेना चाहिए कि कैसे परमेश्वर का वचन उसके समक्ष सब कुछ प्रकट कर देता है। सबको परमेश्वर के सामने ही लेखा देना है। और इसलिए उन्हें उसके विश्राम में प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए और जंगल में भटक रहे इस्राएल का अनुसरण नहीं करना चाहिए।

मलिकिसिदक का महायाजक पद (4:14-7:28)

स्वर्गदूतों के प्रकाशनों और मूसा के अधिकार पर चर्चा करने के बाद इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 4:14-7:28 में मलिकिसिदक के राजकीय महायाजक पद के विषय में स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को चुनौती दी।

अपने पिछले अध्याय में हमने कुमरान में खोजे गए एक हस्तलेख *11 कुमरान मेल्खिजेदेक* या *दी मिद्राश ओन मेल्खिजेदेक* का उल्लेख किया था। इस हस्तलेख ने मलिकिसिदक को एक स्वर्गीय प्राणी के रूप में चित्रित किया जो प्रायश्चित के अंतिम बलिदानों को चढ़ाने तथा परमेश्वर के राज्य को लाने के लिए अंतिम दिनों में प्रकट होगा। स्पष्ट है कि मूल पाठकों में से कुछ लोग इस प्रकार की शिक्षा से उलझन में पड़ गए थे। उन्हें मलिकिसिदक के आने की आशा करने की अपेक्षा परमेश्वर के राजकीय महायाजक के रूप में यीशु का अनुसरण क्यों करना चाहिए? इसलिए इब्रानियों के लेखक ने यह दर्शाया कि यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सच्चा राजकीय याजक है।

ये भाग चार खंडों में विभाजित होता है। पहला और तीसरा खंड पाठकों को मलिकिसिदक से अधिक मसीह को थामे रहने का उपदेश देता है, और दूसरा और चौथा खंड इसके कारणों को स्पष्ट करता है।

इब्रानियों 4:14-16 में लेखक ने मलिकिसिदक के विषय का परिचय अपने पाठकों के लिए एक उपदेश के साथ दिया कि वे उस विश्वास को दृढ़ता से थामे रहें जिसका उन्होंने अंगीकार किया है। उसने इस बात पर बल देते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया कि यीशु एक पूर्ण मनुष्य, पापरहित, महान महायाजक है जो स्वर्ग पर चढ़ गया और वह विश्वासियों के लिए यह संभव बनाता है कि वे आवश्यकता के समय में अपनी सहायता के लिए दया और अनुग्रह को प्राप्त करें।

पद 5:1-10 में इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने समझाया कि कैसे यीशु मलिकिसिदक की रीति पर परमेश्वर का राजकीय महायाजक होने के योग्य बना। यीशु ने अपनी आज्ञाकारिता और दुखों के द्वारा याजक होने की योग्यताओं को पूरा किया। परंतु उसने स्वयं को इस पद के लिए उन्नत नहीं किया। भजन 2:7 और भजन 110:4 को उदधृत करने के द्वारा लेखक ने दर्शाया जिन आशाओं को इस्राएल ने मलिकिसिदक में रखा था वे वास्तव में दाऊद के राजवंश में पूरी होंगी। अतः स्वयं परमेश्वर ने यीशु को मलिकिसिदक की रीति पर राजकीय महायाजक होने के लिए ठहराया। इस प्रकार, यीशु उन सब के लिए अनंत उद्धार का स्रोत बन गया जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

इब्रानियों 5:11-6:12 इस विषय पर इब्रानियों के पाठकों के लिए एक लंबा उपदेश है कि वे आरंभ की बातों से आगे बढ़कर परिपक्वता को प्राप्त करें। लेखक ने स्वीकार किया कि उसके पाठक मसीह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

और मलिकिसिदक पर आधारित उसकी चर्चा को समझने में असमर्थ थे। परंतु उसने उन्हें अपनी समझ में परिपक्व होने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे अधार्मिकता में न गिर जाएँ। उसने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे एक सच्चे राजकीय महायाजक में अपने विश्वास से भटक जाते हैं तो पाप के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं रह जाएगा। लेखक के मन में अपने पाठकों के लिए बड़ी आशाएँ थीं, परंतु उन्हें अपने आलस्य से मुड़ना था और उनका अनुसरण करना था जिनके पास उन बातों को प्राप्त करने का विश्वास और संयम था जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी।

इब्रानियों 6:13-7:28 में लेखक ने अपनी इस चर्चा को जारी रखा कि यीशु मलिकिसिदक की रीति पर राजकीय याजक होने की पूर्णता है। विशेषकर, उसने समझाया कि यीशु का राजकीय याजकपद लेवीय याजकपद से श्रेष्ठ था। जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई तब यरूशलेम के मंदिर में सभाएँ निरंतर चल रही थीं। इस सच्चाई ने उस मसीही दावे को गंभीर चुनौती दी कि यीशु की मृत्यु ने मंदिर में लेवीय बलिदानों की आवश्यकता का अंत कर दिया था। इस चुनौती का उत्तर देने के लिए लेखक ने उन स्थानीय यहूदी मान्यताओं पर निर्माण किया कि मलिकिसिदक अंतिम दिनों में सारे बलिदानों का अंत कर देगा। परंतु उसने भजन 110:4 में परमेश्वर के द्वारा ली गई शपथ से निष्कर्ष निकाला कि दाऊद का महान पुत्र यीशु मलिकिसिदक की रीति पर अनंत राजकीय याजक था। अतः यीशु ने लेवियों की बलिदान-संबंधी प्रणाली का अंत कर दिया।

लेवीय याजकपद पर यीशु की श्रेष्ठता को दिखाने के लिए लेखक ने इस बात पर भी ध्यान दिया कि उत्पत्ति 14:20 में अब्राहम ने यह दर्शाते हुए दशमांश दिया कि मलिकिसिदक उससे श्रेष्ठ था। अतः अब्राहम के वंशज लेवी ने अब्राहम के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप से ऐसा ही किया। इसलिए मलिकिसिदक की रीति पर राजकीय महायाजक होने के रूप में मसीह के लिए यह उचित था कि वह लेवीय याजकपद का स्थान ले ले। लेवी-संबंधी बलिदान कभी पूरे प्रायश्चित को नहीं ला सके, परंतु मलिकिसिदक के राजकीय याजकपद की पूर्णता के रूप में मसीह ने सदैव और सब के लिए एक ही बार में बलिदान करके प्रायश्चित को पूरा कर दिया।

> प्रचारकों और शिक्षकों के लिए इब्रानियों की पुस्तक का एक पंसदीदा भाग यीशु की मलिकिसिदक के साथ तुलना है, जो पुराने नियम का लगभग एक अनजान याजक है। इस तुलना से पहले लेखक लेवियों के हारून-संबंधी याजकपद के साथ तुलना करता है। हारून-संबंधी याजकपद वंशानुगत था; यह पिता से पुत्र को, और लेवी के गोत्र से स्थानांतरित हुआ था। यीशु का याजकपद ऐसा नहीं था। वह लेवियों का उत्तराधिकारी नहीं था क्योंकि वह दाऊद के गोत्र, अर्थात् यहूदा से आया था। क्योंकि हारूनवंशी याजक नाश हो जाएँगे, इसलिए हारून का याजकपद पिता से पुत्र को स्थानांतरित हुआ। इसके विपरीत, यीशु का याजकपद अनंतकाल का था। उसका याजकपद सदैव का है; वह आज भी वैसा ही याजक है ... मलिकिसिदक के पास याजक होने का कोई मानवीय अधिकार नहीं है, परंतु वह परमेश्वर के द्वारा चुने हुए एक याजक के रूप में इतिहास में प्रवेश करता है, और फिर ओझल हो जाता है। यीशु भी ऐसा ही करता है, और अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के अंत में पुनरूत्थान के बाद स्वर्ग पर चढ़ जाता है।
>
> — डॉ. एल्विन पडिल्ला, अनुवाद

> इब्रानियों के पत्र में दो प्रकार के याजकपदों का उल्लेख किया गया है। एक पारंपरिक याजकपद है जो हारून से आरंभ हुआ और फिर लेवी गोत्र के द्वारा आगे बढ़ा, जिसे लेवीय याजकपद कहा जाता है। और फिर मलिकिसिदक का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> बहुत ही असामान्य याजकपद था जो कुलपिताओं के इतिहास के आरंभ में प्रकट होता है और वह अब्राहम के समय में प्रभु का याजक, अर्थात् प्रभु का एक महायाजक था। और यीशु की तुलना उन दोनों से होती है, एक भाव में लेवीय याजकपद से श्रेष्ठता को दिखाने के लिए, और दूसरे भाव में महायाजक के रूप में मलिकिसिदक की अद्वितीयता की समानता को दिखाने के लिए ... उसका महायाजकपद अनंत रूप से ठहराया हुआ था। और मलिकिसिदिक के बारे में हम यह जानते हैं कि उसके माता-पिता नहीं थे; वह अपने पीछे बिना किसी वंशावली के सामने आता है; वह अब्राहम से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि अब्राहम ने उसको भेंट चढ़ाई थी, उसने अपना दशमांश उसे दिया, और छोटा अपने से श्रेष्ठ को दशमांश देता है ...परंतु महायाजक का यह नमूना, जो हर बात में श्रेष्ठ है और उन लोगों से भेंट लेता है जो ऐसे कुलपति थे जिन्होंने यहूदी धर्म और इस्राएल के इतिहास की रचना की, और जिनके अंतर्गत अंततः लेवीय याजकपद को ठहराया गया, मलिकिसिदक की यह छवि सदैव बनी रहती है। और मसीह का याजकपद, यह नया याजकपद मलिकिसिदक के आदर्श पर स्थापित किया गया है।
>
> — डॉ. एडवर्ड एम. कीजिरियन

नई वाचा (8:1-11:40)

इब्रानियों 8:1-11:40 में चौथा मुख्य विभाजन नई वाचा पर ध्यान केंद्रित करता है। यहाँ, इब्रानियों के लेखक ने परमेश्वर द्वारा स्थापित राजकीय महायाजक के रूप में इस बात पर चर्चा करने के द्वारा मसीह की श्रेष्ठता को और अधिक स्पष्ट किया कि कैसे नई वाचा पुरानी वाचा से श्रेष्ठ है।

शब्द "नई वाचा" यिर्मयाह 31:31 से निकल कर आता है। इस पद में भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर इस्राएल और यहूदा को इस्राएल के निर्वासन के बाद अंतिम दिनों में अंतिम नवीनीकरण की एक वाचा प्रदान करेगा। यही युगांत-संबंधी वाचा को यशायाह 54:10 में और यहेजकेल अध्याय 34 और 37 में "शांति की वाचा" कहा गया था। अतः यहाँ इब्रानियों का लेखक अंतिम दिनों में मलिकिसिदक के बारे में अपनी चर्चा से हटकर नई वाचा की चर्चा की ओर आगे बढ़ा।

इब्रानियों के इस भाग में आठ मुख्य खंड पाए जाते हैं। पहला, इब्रानियों 8:1-13 इस विचार से परिचित कराता है कि यीशु स्वर्ग के राजकीय महायाजक होने के रूप में नई वाचा की मध्यस्थता करता है।

पद 1 और 2 में लेखक उसे स्पष्ट रूप से कहता है जिसे उसने "सबसे बड़ी बात" कहा। उसने समझाया कि मसीह, अर्थात् राजकीय महायाजक स्वर्ग में है और "उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन् प्रभु ने खड़ा किया है।"

दूसरे शब्दों में, लेवीय याजकपद ने पृथ्वी पर उस भूमिका को पूरा किया। परंतु उनका याजकपद व्यवस्था पर आधारित था। पुराने नियम में मूसा के साथ बाँधी गई वाचा ने पृथ्वी के लेवीय याजकपद को स्थापित किया, परंतु इस्राएल के पापों के कारण यह असफल हो गया।

इसके विपरीत, यिर्मयाह 31 की नई वाचा विफल नहीं हो सकती क्योंकि इब्रानियों 8:6 हमें बताता है :

> यह उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बाँधी गई है (इब्रानियों 8:6)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

ये "उत्तम प्रतिज्ञाएँ" परमेश्वर के लोगों के पूर्ण परिवर्तन और उनके पापों की अंतिम अनंत क्षमा को प्रदान करती हैं।

इब्रानियों 9:1-28 में लेखक ने इस तथ्य को विस्तार के साथ बताया कि यीशु का स्वर्गीय राजकीय याजकपद लेवीय याजकपद से श्रेष्ठ है। उसने इस खंड का आरंभ मूसा के पृथ्वी पर के मिलापवाले तंबू की साज-सजावट का उल्लेख करते हुए किया, जिसमें उसने उन विशेषताओं को प्रकट किया जो परमेश्वर के स्वर्गीय पवित्र स्थान के समान थीं। इसके अतिरिक्त, उसने प्रायश्चित के वार्षिक दिन के संबंध में उन याजकीय क्रियाकलापों का वर्णन किया जिनकी आज्ञा लैव्यव्यवस्था 16:34 में दी गई थी। इसने यह दर्शाया कि पृथ्वी पर के मिलापवाले तंबू के बलिदान पाप की समस्या का पूरी तरह से समाधान नहीं कर सके बल्कि उन्हें प्रत्येक वर्ष दोहराया जाना जरूरी था। ये बलिदान उस समय तक के लिए ठहराए गए थे जब तक अंतिम दिनों में इतिहास अपनी पराकाष्ठा में नहीं पहुँच गया — जिसे उसने इब्रानियों 9:10 में "सुधार का समय" कहा। तब इब्रानियों 9:11 में उसने यह जोड़ा :

> **मसीह आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया (इब्रानियों 9:11)।**

इस कथन ने बल दिया कि जो मसीह पर विश्वास रखते हैं, वे उसके सिद्ध याजकीय प्रायश्चित के कारण पाप से स्वतंत्र हो गए हैं, और अब उनके पास स्वर्ग में अनुग्रह के सिंहासन के पास खुली पहुँच है।

> **पाप के लिए यीशु के बलिदान और पुराने नियम की बलिदानी प्रणाली के बारे में इब्रानियों को लिखे पत्र का लेखक जो एक विपरीतता को दर्शाता है, वह यह है कि पुराने नियम की बलिदानी प्रणाली में याजक का कार्य कभी पूरा नहीं होता था। याजक को बार-बार पाप के लिए बलिदान चढाने पड़ते थे। और जिस तर्क को लेखक रख रहा है, वह यह है कि पाप को दूर करने का जो कार्य है वह कभी पूरा नहीं होता, परंतु यीशु का कार्य इसे हर तरह से पूरा कर देता है। वास्तव में, यीशु ऐसा महान महायाजक है, जिसने पाप के लिए स्वयं का बलिदान चढ़ा दिया, और पिता के दाहिने हाथ बैठ गया, जबकि पुराने नियम के याजक अपने पैरों पर खड़े रहे क्योंकि उनका कार्य अब भी बाकी था। परंतु यीशु जाकर बैठ गया, और इब्रानियों का लेखक इसकी व्याख्या यह कहते हुए करता है कि उसका कार्य पूरा हो गया है, पाप का पूरा निपटारा कर लिया गया है, कार्य पूरा हो गया है।**
>
> **— डॉ. कोंस्टैंटटाईन कैंपबेल**

लेखक ने यह भी समझाया कि यीशु का बलिदान क्यों आवश्यक था। उसके लिए उसने इच्छा का उदाहरण दिया है। सामान्य इच्छाएँ किसी की मृत्यु के द्वारा आरंभ होती हैं। मूसा की वाचा का आरंभ मृत्यु और लहू के साथ हुआ। इसलिए लेखक ने तर्क दिया कि नई वाचा का आरंभ भी मृत्यु और लहू के साथ होना था — परमेश्वर के स्वर्गीय भवन के आंतरिक पवित्र स्थान में मसीह के लहू के साथ। परंतु इस विषय में "इच्छा" का उत्तराधिकार क्षमा है। अतः क्षमा तब तक प्रदान नहीं की जा सकती जब तक लोग यीशु के बलिदान के लहू से शुद्ध नहीं हो जाते। इब्रानियों 9:26 में लेखक इसे इस प्रकार कहता है :

> **अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे (इब्रानियों 9:26)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

यीशु ने एक ही बार में सब के लिए पाप को हटा दिया क्योंकि उसका लहू मनुष्य-निर्मित पवित्र स्थान में नहीं छिड़का गया। उसने अपने बलिदान के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश किया। जिस प्रकार परमेश्वर ने यिर्मयाह 31:34 में प्रतिज्ञा की थी :

> **मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:34)।**

यीशु अपने लोगों को दंड से छुड़ाने के लिए एक छुड़ौती के रूप में मारा गया। लेखक यह कहते हुए इस खंड को समाप्त करता है कि मसीह वापस आएगा, परंतु फिर से पाप को उठाने के लिए नहीं। जब यीशु वापस आएगा, तो वह उनके लिए उद्धार की पूर्णता को लेकर आएगा जो उसकी बाट जोहते हैं।

इब्रानियों 10:1-18 मूसा की वाचा की तुलना नई वाचा के साथ करना और उनके बीच विपरीतता को दर्शाना जारी रखता है। इस बार लेखक ने दावा किया कि नई वाचा में यीशु का महायाजकपद पाप की अंतिम क्षमा को लेकर आया। उसने दोहराया कि प्रायश्चित के दिन के बलिदान पापों को वार्षिक रूप से स्मरण दिलाते थे, परंतु वे पापों को हटा नहीं सके। और उसने यह माना कि पशुओं का बलिदान कभी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। उसने भजन 40 में दाऊद को उदधृत किया जहाँ दाऊद ने स्वयं को परमेश्वर के लिए एक आदर्श स्वरूप चढ़ाया। और उसने समझाया कि यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा इस आदर्श को पूरा किया। जहाँ लेवीय बलिदान पाप की अंतिम क्षमा को नहीं ला सके, वहीं नई वाचा के विषय में यिर्मयाह की भविष्यवाणी ने प्रतिज्ञा की कि परमेश्वर अपने लोगों के पापों को सदा के लिए क्षमा कर देगा। यीशु ने इसे पूरा किया। इसलिए अब पशुओं के वार्षिक बलिदान की कोई आवश्यकता नहीं है।

इब्रानियों 10:19-23 उपदेशों के चार खंडों में से पहला है। पहला, लेखक ने अपने पाठकों को परमेश्वर के निकट आने और उसमें अपनी आशा को थामे रहने के लिए कहा। उसने समझाया कि अपने लहू के द्वारा मसीह ने अति पवित्र स्थान में प्रवेश करने का मार्ग खोल दिया था। अब, जैसे कि पद 23 हमें बताता है, वे "अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे" रहे क्योंकि परमेश्वर सच्चा है।

इब्रानियों 10:24-31 में लेखक ने अपने पाठकों को यह उपदेश भी दिया कि वे एक दूसरे को "प्रेम और भले कामों में" प्रोत्साहित करते रहें। उसने उल्लेख किया कि उन्हें एक दूसरे से मिलना चाहिए, और तब तो और अधिक जब वे देखते हैं कि न्याय का दिन निकट आ रहा है। फिर उसने उस दंड की कठोरता का वर्णन किया जिन्होंने "परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा," जिन्होंने वाचा के लहू को अपवित्र जाना, और जिन्होंने अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया। जैसे उसने बताया, परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा।

इब्रानियों 10:32-35 में लेखक ने अपने पाठकों को बुलाया कि वे अपने अतीत को स्मरण रखें और अपने साहस को न छोड़ें। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि उन्होंने अतीत में अपनी इच्छा से और आनंद से दुखों को सहा था क्योंकि वे जानते थे कि आने वाले संसार में उनके लिए उत्तम और स्थाई संपत्ति तैयार है। यदि वे इसी प्रकार आगे बढ़ते रहते हैं, तो उन्हें बड़ा प्रतिफल मिलेगा।

और इब्रानियों 10:36-39 ने पाठकों को परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में दृढ़ बने रहने का उपदेश दिया। उसने उन्हें यह स्मरण दिलाने के द्वारा इस उपदेश का समर्थन किया कि परमेश्वर अंतिम दंड और आशीषों को लाने के लिए आ रहा है। उसने उन्हें चेतावनी दी कि परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं होता जो विश्वास में जीवन जीने से पीछे हट जाते हैं। परंतु इब्रानियों 10:39 में उसने यह कहा :

> **पर हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएँ पर विश्वास करनेवाले हैं कि प्राणों को बचाएँ (इब्रानियों 10:39)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> यह स्पष्ट है कि ये यहूदी विश्वासी थके हुए थे, वे भ्रमित थे, वे सताए हुए थे — यह पूरे संसार और कलीसिया के पूरे इतिहास के मसीहियों के लिए बहुत प्रासंगिक है — परंतु थकित होने के साथ-साथ वे अपने विश्वास में लड़खड़ा भी रहे थे। और उनके घरों में तोड़फोड़ भी की गई थी। अभी तक वहाँ पर इतना सताव नहीं हुआ था कि कोई शहीद हुआ हो, परंतु लगता था कि ऐसा होने ही वाला था, और इसलिए उनके विश्वास के सामने बड़ी चुनौतियाँ थीं, और बहुत से कारण थे कि वे अपने विश्वास को त्यागकर अपने पुराने मार्गों में लौट जाएँ। और लेखक उन्हें पत्र लिखकर प्रोत्साहित करता है कि वे उस नई वाचा के प्रति सच्चे बने रहें जिसमें उन्होंने यीशु पर विश्वास करना आरंभ किया है।
>
> — डॉ. के. एरिक थोनेस

उपदेशों की इस श्रृंखला के बाद, इब्रानियों 11:1-40 में लेखक ने अपने पत्र को उस विश्वास पर केंद्रित किया जो उद्धार देता है। हम पहले ही कह चुके हैं कि इब्रानियों के पाठकों ने अतीत में सताव को सहन किया था और संभावना यह भी थी कि उन्हें उससे भी अधिक सहना पड़े। इसलिए लेखक ने उन्हें ऐसा विश्वास रखने को प्रोत्साहित किया जो कठिन समयों में पीछे नहीं हटता।

फिर उसने पुराने नियम के इतिहास के ऐसे चरित्रों की जो कठिनाई को सहते हुए भी विश्वासयोग्य बने रहे, एक लंबी सूची देने के द्वारा समझाया कि उसके कहने का क्या अर्थ था। अपने पूरे जीवनकाल में इन विश्वासयोग्य लोगों ने उसे प्राप्त नहीं किया जिसकी प्रतिज्ञा इनसे की गई थी क्योंकि परमेश्वर की प्रतिज्ञा भविष्य के समय के लिए थी। परंतु जैसे कि इब्रानियों का लेखक स्पष्ट करता है, वे मसीह के पुनरागमन के समय लेखक और उसके पाठकों के समान ही सिद्ध बनाए जाएँगे।

व्यावहारिक दृढ़ता (12:1–13:25)

इब्रानियों 12:1–13:25 में अंतिम मुख्य भाग व्यावहारिक दृढ़ता के विषय का विस्तार से वर्णन करने के द्वारा इब्रानियों की पुस्तक को समाप्ति की ओर लकर जाता है। इस भाग में उपदेशों और उनके स्पष्टीकरणों की एक लंबी श्रृंखला पाई जाती है। हमारे उद्देश्यों के लिए, हम इन उपदेशों को केवल सारगर्भित करेंगे।

जब इब्रानियों का लेखक अपनी पुस्तक की समाप्ति की ओर बढ़ रहा था, तो उसने जीवन के विशेष क्षेत्रों के बारे में जल्दी-जल्दी कई विभिन्न उपदेशों का उल्लेख किया। कई रूपों में यह इस पुस्तक का सबसे अधिक व्यावहारिक भाग है क्योंकि यह विशेषकर ऐसे व्यवहारों के बारे में बात करता है जिनका अनुसरण वह अपने पाठकों के जीवन में देखना चाहता था। परंतु लेखक ने अपने पाठकों को मसीह के अनुयायियों के रूप में प्राप्त किए गए महान विशेषाधिकारों के दर्शन से प्रेरित करने और ऊर्जावान बनाने का अवसर भी लिया।

इन उपदेशों को पाँच सामान्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, और उनके बाद में यह पत्र समाप्त हो जाता है। इब्रानियों 12:1-3 में लेखक एक दौड़ का उदाहरण देकर अपने पाठकों को दृढ़ बने रहने का उपदेश देता है। वे पाप को दूर फेंकने और उस मसीह पर ध्यान लगाने के द्वारा ऐसा कर सकते हैं, जिसने स्वयं भी ऐसा ही किया था।

इब्रानियों 12:4-13 ने पाठकों को उपदेश दिया कि वे कठिनाइयों का सामना परमेश्वर की ओर से पिता की ताड़ना के रूप में करें। लेखक ने नीतिवचन 3:11,12 को उदधृत करके इस दृष्टिकोण का समर्थन किया। उसने समझाया कि परमेश्वर का अनुशासन “चैन के साथ धर्म का प्रतिफल” प्रदान करता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

है। इसलिए उसने उन्हें स्वयं को मजबूत बनाने और दुखों के द्वारा बलहीन न हो जाने के लिए उत्साहित किया।

इब्रानियों 12:14-17 में लेखक ने एक बार फिर अपने पाठकों को उपदेश दिया कि एक दूसरे को प्रोत्साहित करें। उसने उनसे मेल मिलाप में रहने और पवित्र बनने का आग्रह किया। उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि कोई पीछे न रह जाए या लैंगिक रूप से अनैतिक न बन जाए। उसने एसाव का उदाहरण देने के द्वारा जो अपने उत्तराधिकार को वापस प्राप्त करने के लिए कुछ नहीं कर सका, स्पष्ट किया कि यह कितना महत्वपूर्ण था।

इब्रानियों 12:18-19 में लेखक ने अपने पाठकों को मसीह में प्राप्त अपनी आशीषों के लिए धन्यवादी बने रहने का उपदेश दिया। अपने पाठकों के मनों को उत्साहित करने और उन्हें दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित करने के लिए उसने उनके द्वारा प्राप्त असीमित विशेषाधिकारों और आशीषों का वर्णन किया। इब्रानियों 12:22-24 को सुनिए :

> पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है (इब्रानियों 12:22-24)।

इब्रानियों 12:22 में और उससे आगे इब्रानियों का लेखक कहता है, “हम सिय्योन के पास आ पहुँचे हैं।” अब आपको इसे पिछले अध्याय के साथ जोड़कर देखना चाहिए क्योंकि अध्याय 11 में जिन्हें हम “विश्वास के योद्धा” कहते हैं, पुराने नियम के उन सब पवित्र लोगों से कहा गया था कि वे प्रतिज्ञा को प्राप्त किए बिना विश्वास में मर गए। परंतु फिर, अध्याय 12 के आरंभ में हमसे कहा जाता है कि मसीह प्रवेश कर चुका है, कि मसीह ने दौड़ को पूरा कर लिया है; वह जय पा चुका है। और इस प्रकार, पद 22 और उससे आगे के पद यह कहते हैं कि हम अब ऐसे स्थान पर आ पहुँचे हैं जिसका आनंद पुराने नियम के पवित्र लोगों ने भी अपने पृथ्वी पर के जीवन में नहीं लिया था। और इब्रानियों का लेखक यह कहते हुए आगे बढ़ता है, “तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, के पास आए हो,” और यहाँ वह परमेश्वर के सिंहासन, अर्थात् स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर की उपस्थिति का वर्णन कर रहा है। और इसका एक चौंका देनेवाला अर्थ यह है कि पुराने नियम में सिय्योन पहाड़ और यरूशलेम ने जिसकी ओर भी संकेत किया वह उनके लिए वास्तविकता बन गया है जो मसीह में हैं, इसलिए हम भजन 48 को सही रीति से देख सकते हैं, “हमारे परमेश्वर के नगर में यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है!” और हम इसके बारे में सोच सकते हैं कि इसका क्या अर्थ है जब हम पृथ्वी पर मसीह की सभा के रूप में इकट्ठे होते हैं — मानो कि हम स्वर्ग में सिय्योन पहाड़ पर खड़े हैं, पृथ्वी के किसी प्रतिरूप पर नहीं, बल्कि सच्चे स्वर्गीय सिय्योन पर, जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर प्रकट होगा जब नया यरूशलेम नीचे उतरेगा, कि हम उस मसीह में और उसके द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होते हैं जो जय पा चुका है। और इसमें महत्वपूर्ण भिन्नता है कि हम इस संसार की दृश्य कलीसिया को कैसे देखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

— रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

इब्रानियों 13:1-19 में लेखक ने अपने पाठकों को दैनिक जीवन में विश्वासयोग्य रहने के लिए थोड़े शब्दों में प्रोत्साहित किया। उसने एक दूसरे से प्रेम करने, परदेशियों और बंदियों को स्मरण करने, वैवाहिक संबंध का सम्मान करने, संतुष्ट रहने, और अपने अगुवों को स्मरण रखने का उल्लेख किया। उसने उन्हें स्थानीय यहूदी समुदाय की विचित्र शिक्षाओं का विरोध करने और अपने जीवनों में मसीह के दुखों को स्वीकार करने का भी स्मरण कराया। उसने उनसे स्तुति के बलिदान चढ़ाने, भलाई करने, और एक दूसरे के साथ मिल बाँटकर जीवन जीने का आग्रह किया। फिर उसने अपने और अपने साथियों के लिए उनसे प्रार्थना का आग्रह करने के द्वारा इस खंड को समाप्त किया।

अंततः, इब्रानियों 13:20-25 में लेखक ने अपनी पुस्तक को समाप्त किया। पद 20 और 21 में उसने आशीष वचन कहे, जो एक प्रार्थना के रूप में थे कि परमेश्वर, जिसने यीशु को जिलाया, उनमें कार्य करे और महिमा को प्राप्त करे। फिर पद 22 में उसने अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे उसके "उपदेश की बातों" या उसके संदेश को सह लें। और फिर कई अभिवादनों के साथ उसने पत्र को समाप्त किया।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने इब्रानियों की पुस्तक की विषय-वस्तु और सरंचना को देखा है। हमने मसीह में अंतिम दिनों पर केंद्रित आवर्ती विषयों, लेखक के दृष्टिकोणों के लिए पुराने नियम के समर्थन, और दृढ़ बने रहने के उसके कई उपदेशों पर ध्यान दिया है। हमने इस बात पर ध्यान देने के द्वारा पुस्तक की आलंकारिक सरंचना को भी जांचा है कि लेखक ने स्थानीय यहूदी समुदाय से मसीही विश्वास के विरुद्ध आनेवाली चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आवर्ती विषयों को कैसे एक साथ जोड़ा।

इब्रानियों की पुस्तक मसीह के अनुयायियों को एक बड़ा भंडार प्रदान करती है। इसके धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण उन सब कार्यों में गहराई से प्रवेश करते हैं जो मसीह ने हमारे लिए किए हैं। और यह मसीह का अनुसरण करने के अर्थ के ठीक केंद्र में प्रवेश करता है। इब्रानियों की पुस्तक हमें अपने अधिकार के रूप में पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ने और परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाओं की पूर्णता के रूप में मसीह को स्वीकार करने की बुलाहट देती है। और यह हमें उस दिन तक आभारी हृदयों के साथ मसीह से प्रेम करने और उसकी सेवा करने का उपदेश देती है जब तक हम उस राज्य को प्राप्त न कर लें जो वह हमारे लिए तैयार कर रहा है, अर्थात् ऐसा राज्य जो हमेशा अटल रहेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.